प्रसार पत्रक क्रमांक-7

पशुओं में लंगड़ा बुखार : उसका इलाज और बचाव

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय,

चौ. स. कु. हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय,

पालमपुर - 176 062

पशुओं में लंगड़ा बुखार-उसका इलाज और बचाव

पशु पालकों के देखने मे आया होगा कि कई बार बछड़े-बछड़ियाँ अचानक ही पिछली टांगों से लंगड़ाने लगते हैं और उनके पुठ्ठों में सूजन आ जाती है । इन लक्षणों के होने पर बुखार होने की सम्भावना होती है । यह रोग कई अन्य नामों से भी पुकारा जाता है जैसे "फड़ सुजन", "पुठ्ठे की सूजन का रोग" आदि । अग्रेजी में इसे "ब्लैक क्वार्टर" तथा "ब्लैक लैग" कहते है । यह गौ जाति के पशुओं तथा भेड़ों में होने वाला एक छूत का रोग है । भैसों में यह रोग हल्के रूप में ही होता है । बड़ी आयु के पशुओं की अपेक्षा 6 मास से तीन वर्ष तक की छोटी आयु के पशुओं में अधिक होता है । उनमें भी 6 मास से 18 मास के बछड़े-बछड़ियां इस रोग के बहुत ही अधिक शिकार होते है । यह रोग केवल विशेष क्षेत्रों में ही होता है और आमतौर कुछ चरागाहों तक ही सीमित रहता है ।

लँगड़ा बुखार कब और कहां होता है ?

यह रोग बरसात शुरू होते ही फैलने लगता है, हलाँकि अप्रैल, मई और जून के महीनों में भी हो जाता है । गर्म और आर्द्र क्षेत्रों में यह रोग आमतौर पर होता है जिस गांव व फार्म के पशुओं में यह बीमारी एक बार हो जाती है वहाँ प्राय: हर वर्ष होती रहती है । इस रोग का हमला एक साथ बहुत से पशुओं पर तो नही होता जो पशु एक बार इसकी चपेट में आ जाते है वह बच नहीं पाते । हर वर्ष अनेक बछड़े-बछड़ियां इस रोग का शिकार हो जाते है । जिस से पशु पालकों को बहुत हानि होती है और पशु विकास कार्य में काफी बाधा पड़ती है ।

कारण : पुठ्ठे सुजने का रोग गौ जाति पशुओं में क्लोस्ट्रीडियम सैप्टीकम नामक कीटाणु से उत्पन्न होता है । यह कीटाणु केवल सूक्ष्मदर्शी यंत्र से ही देखे जा सकते है । देखने में यह कीटाणु टेनिस के रैकेट के आकार के होते है । इन कीटाणुओं की विशेष बात यह है कि रोगी पशु के रक्त में नहीं पाये जाते, बल्कि

उनका शरीर बहुत ही कमजोर हो जाता है । ऐसे रोगी का इलाज कराने का कोई लाभ नही होता किन्तु ऐसे रोगी बहुत ही कम होते है ।

रोग की पहचान कैसे करें ?

1. छः मास से 3 वर्ष की आयु के पशु में यदि उपरोक्त लक्षण दिखाई दे और विशेषकर पिछली टांगों से अचानक लंगड़ाने लगे तो पुठठे सूजने के रोग का शक करना चाहिए ।
2. रोग की निश्चित जाँच के लिए रोगी माँस पेशियों के टुकड़े हवा में सुखाकर जाँच के लिए प्रयोगशाला में भेजने आवश्यक है ।

इलाज : एन्टीबायोटिक दवाओं का टीका लाभकारी होता है । ये टीके रोग के आरंभ में ही लाभदायक होते है । इस के लिए पशु चिकित्सक की सलाह समय पर ली जानी चाहिए । क्योंकि यह रोग बहुत तेजी से बढ़ता है इसलिए चिकित्सा जितनी जल्दी ही करवाई जाये उतना रोगी को आराम आने की सम्भावना होती है।

बचाव: आजकल पशुओं की कीमत दिन प्रतिदिन बड़ रही है । इसलिए यह आवश्यक है कि ऐसा उपाय किया जाय कि यह रोग ही न फैले । राज्य के पशु पालन विभाग की ओर से इस रोग के बचाव टीके का विशेष प्रबन्ध किया हुआ है। जिस क्षेत्र में यह रोग होता है वहां के पशुपालक अपने निकटतम पशु चिकित्सक से मिल कर 4 मास से 3 वर्ष के सभी गौ जाति के पशुओं को इस रोग का बचाव टीका अवश्य लगवाएँ । इस टीके का असर 6 मास तक रहता है । मई के महीने तो यह टीका लगवा लेना चाहिए । भेड़ों में ऊन कतरने या बच्चा देने से पहले ही इस रोग का बचाव टीका लगवा देना चाहिए ।

रोग फैलने पर क्या करें ?

1. तुरन्त पशु चिकित्सक से सम्पर्क करके, पशुओं को बचाव टीका (ब्लैक क्वाटर वैक्सीन) लगवाने का प्रबन्ध करें।
2. कीटाणुओं से मिट्टी दूषित होने से बचाने के लिए और रोग की छूत फैलने से रोकने के लिए आवश्यक है कि पुटठे सूजने के रोग से मरे पशुओं को भूमि में 2 से 2.5 मीटर की गहराई तक चूने से ढ़ककर दबा देना चाहिए ।
3. ऐसे क्षेत्रों में जहाँ यह बिमारी पहले होती रही हो अपने पशुओं को दूर रखें ।
4. जिस खेत में इस रोग के कीटाणु हों उसमें हल चला देवें और कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए मिटटी में चुना मिला देवें ।
5. जिस पशुघर (बाड़े) में किसी पशु की मृत्यु हुई हो उसे भली प्रकार साफ करना चाहिए यदि पशुघर का फर्श पक्का हो तो फिनाईल मिले पानी से धोना चाहिए और दीवारों पर नीला थोथा मिली सफेदी करनी चाहिए । कच्चे फर्श की 15 सैटींमीटर गहरी मिट्टी खोदकर गांव से बाहर दबा देवें और नई मिट्टी में चूना मिलाकर वहां विछा देवें ।
6. जब तक रोग काबू में न आए अपने पशु चिकित्सक से वाकायदा सम्पर्क बनाये रखें और पशु-चिकित्सक द्वारा दी गई सलाह मानें ।